रिचर्ड ट्रेविथिक (1771-1833)
जॉर्ज स्टेफिनसन (1781-1848)
स्टीम रेल इंजन

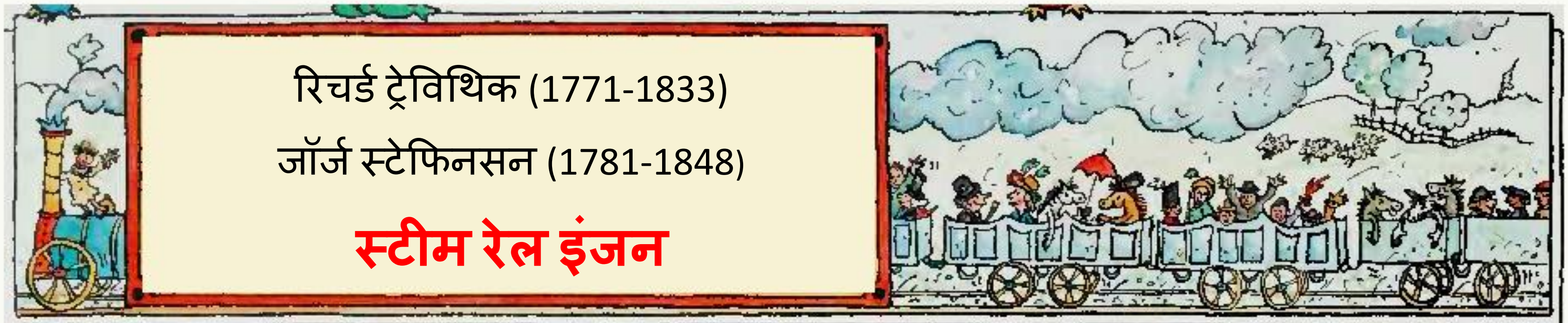

जेम्स वाट के विपरीत, रिचर्ड ट्रेविथिक ने स्टीम ट्रांसपोर्ट का सपना संजोया था. वो जल्द ही स्कूल छोड़कर अपने पिता के साथ खदान में काम करने लगा. वहां उसने उन स्टीम इंजनों पर काम किया जो रेल-पटरी पर कोयले की वैगनों को खींचते थे.

रिचर्ड ने उच्च-दाब का एक छोटा इंजन बनाया जिसमें पहिए लगे थे, पर वो इंजन एक पास के घर से जाकर टकरा गया! फिर 1803 में उसने एक स्टीम इंजन बनाया जो खदान की रेल की पटरी पर चलता था. पर उससे पटरी ही टूट गई.

चार साल बाद रिचर्ड ने एक हल्का स्टीम इंजन बनाया जो पैसेंजर डिब्बों को एक गोलाकार पटरी पर खींच सकता था. उसमें लोगों को बड़ा मज़ा आया. पर रिचर्ड अपने इंजन के विकास के लिए पूँजी जमा नहीं कर पाया. फिर उसने इंजन का आईडिया ही छोड़ दिया और पेरू में जाकर खदान इंजीनियर का काम करने लगा.

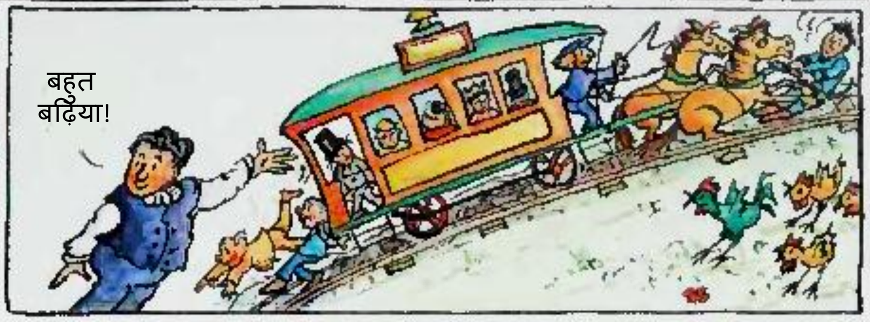

एक नौजवान व्यक्ति - जॉर्ज स्टेफिनसन ने, वो चुनौती स्वीकार की. जॉर्ज ने भी बचपन से ही खदान में काम किया था. उसने खदान मज़दूरों के लिए एक "सेफ्टी लैंप" का इज़ाद भी किया था. उसने स्टीम इंजन की शक्ति को भी बढ़ाया था. वो घोड़ा-गाड़ियों वाली बग्गियों के स्थान पर स्टीम-इंजन उपयोग करना चाहता था.

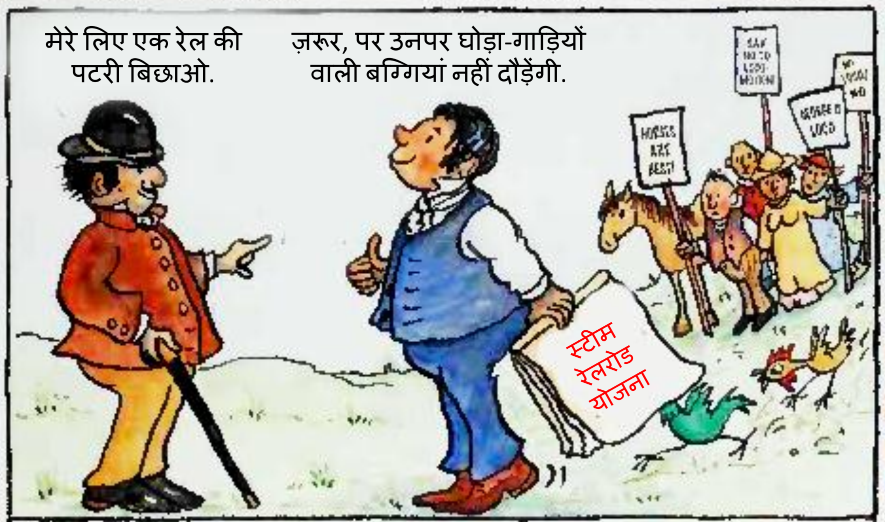

जॉर्ज को तब अच्छा मौका मिला जब उसने एडवर्ड पीसे नाम के व्यापारी की नौकरी की. व्यापारी, एक शहर से दूसरे शहर तक, माल ढोना चाहता था.

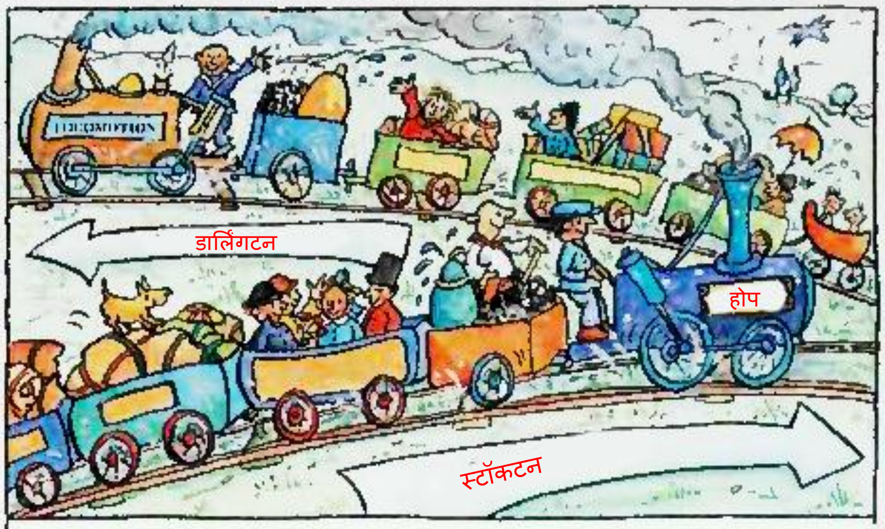

1825 में जॉर्ज स्टेफिनसन के पास दो इंजन थे -"लोकोमोशन" और "होप" और साथ में एक सवारी ट्रेन भी जिसका नाम "एक्सपेरिमेंट" था. वे सभी इन दोनों शहरों के बीच चलते थे.

फिर 1829 में जॉर्ज और उसके बेटे रोबर्ट ने अपनी ट्रेन "राकेट" के साथ एक स्पर्धा में भाग लिया और उसमें वे जीते. उनकी ट्रेन 35-मील प्रति घंटे की भयंकर तेज़ गति से दौड़ी! इस प्रतियोगिता से ब्रिटेन की सरकार को स्टीम रेलरोड की उपयोगिता समझ में आई. 1838 तक जॉर्ज की रेलरोड इतनी बढ़िया तरीके से चल रही थी कि फिर वो रिटायर हो गया. पर उसने नए- नए अविष्कार करना बंद नहीं किए, और वो हमेशा ट्रेन से ही यात्रा करता था!